संरचनावाद (Structuralism)

— संरचनावाद की संस्थापना विलियम वुण्ट के शिष्य (E.B. Titchener) द्वारा अमेरिका के कॉर्नेल विश्वविद्यालय में की गई।

E.B. Titchener (1867 – 1927) का जन्म – 1867 में इंग्लैंड के चीचेस्टर में हुआ था। स्नातक – ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय। 1892 में वुण्ट के निर्देशन में Ph.D की उपाधि प्राप्त की लिपजिग विश्वविद्यालय, जर्मनी से। वहाँ से वे इंग्लैंड लौट गये और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में जीवविज्ञान के व्याख्याता के पद पर नियुक्त हुये। फिर वे अमेरिका चले गये और कॉर्नेल विश्वविद्यालय में 35 वर्ष तक रहे, वहाँ उन्होंने एक विशेष संप्रदाय की संस्थापना किये जिसे संरचनावाद (Structuralism) की संज्ञा दी गई।

Books —

- An Outline of Psychology – 1896
- The Primer of Psychology – 1898
- Experimental Psychology – (1901 – 1905)
- Lectures in the Elementary Psychology of Feeling and Attention. (1908).
- Experimental Psychology of Thought process. – 1909
- Textbook of Psychology – 1910.
- Editor – American Journal of Psychology.

— 1927 ई० को मस्तिष्क ट्यूमर के कारण मृत्यु

→ 1898 में टिचनर एक शोध-पत्र प्रकाशित किया जिसका शीर्षक — The Postulates of Structural Psychology था, जिसके साथ ही संरचनावाद की औपचारिक संस्थापना मानी जाती है।

संरचनावाद मनोविज्ञान की मुख्य विशेषताएँ —

- मनोविज्ञान का विषय-वस्तु
- मनोविज्ञान की विधियाँ
- ध्यान के नियम

Scanned with CamScanner

- साहचर्य के नियम
- संवेग
- चिंतन
- मन-शरीर समस्या

→ मनोविज्ञान का विषय-वस्तु –

- टिचेनर ने स्पष्ट किया कि सभी विज्ञान का आरंभ अनुभूति से ही होता है. इन्होंने वुण्ट द्वारा किये गये अनुभूति के विभाजन (तात्कालिक और मध्यवर्ती अनुभूति) से सहमत नहीं थे। टिचेनर के लिए सभी अनुभूतियाँ तात्कालिक थीं। मनोविज्ञान के विषय-वस्तु की औपचारिक परिभाषा देते हुए टिचेनर ने कहा कि - "अनुभव करने वाले व्यक्ति पर आधारित अनुभूति" ही मनोविज्ञान का विषय-वस्तु है।

टिचेनर ने मन तथा चेतना के बीच भी अंतर किये। जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति की अनुभूतियों के योग को मन तथा किसी खास समय में व्यक्ति की अनुभूतियों के योग को चेतना कहा है।

टिचेनर के अनुसार मनोविज्ञान की तीन समस्याएँ हैं।
क्या, कैसे और क्यों?

क्या? से तात्पर्य मानसिक अनुभूति का उसके सरलतम तत्वों में विश्लेषण (analysis) से था।

कैसे? से तात्पर्य यह खोज करना था कि मानसिक अनुभूति के तत्व किस तरह तथा कौन-कौन से नियमों से संयोजित होते हैं।

क्यों? से तात्पर्य उन तरीकों से होता है, जिसके सहारे मानसिक घटनाएँ अपनी दैहिक अवस्थाओं अर्थात् मस्तिष्क व तंत्रिका तंत्र से सहसंबंधित होते हैं।

टिचेनर के अनुसार चेतना के तीन मूल तत्व हैं — संवेदन, प्रतिमा तथा भाव। वुण्ट भाव को चेतना का स्वतंत्र तत्व नहीं मानते थे। टिचेनर ने वुण्ट के '<u>त्रिविमीय सिद्धान्त</u>' को अस्वीकृत कर दिया। वुण्ट द्वारा इस सिद्धान्त के तहत प्रतिपादित तीन आयामों अर्थात् सुख-दुःख, उत्तेजना-शांत, तनाव-शिथिल में टिचेनर ने मात्र पहले आयाम को ही स्वीकृत किया और अन्य दो आयामों को संवेदन एवं प्रतिमा में ही सम्मिलित कर लिया।

Scanned with CamScanner

टिचनर ने यह भी स्पष्ट किया कि चेतन के तत्वों की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। वुंट ने ऐसे दो विशेषताएँ - 'गुण' तथा 'तीव्रता' बतलाया था। टिचनर ने इनमें दो और विशेषताएँ 'स्पष्टता' तथा 'अवधि' (duration) को जोड़ा। इसके अलावा संवेदन की एक और विशेषता 'विस्तार' भी देखने को मिलती है।

इस तरह टिचनर ने चेतन के संपूर्ण संरचना को उनके तत्वों तथा मुख्य विशेषताओं के रूप में काफी स्पष्ट किया।

→ मनोविज्ञान की विधियाँ —

वुंट के समान टिचनर भी अन्तर्निरीक्षण तथा प्रयोग को मनोविज्ञान की मुख्य विधि माना है। टिचनर के लिए अन्तर्निरीक्षण विधि वुंट की तुलना में अधिक औपचारिक है। उन्होंने इसे प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण नियमों का प्रतिपादन किया —

(i) प्रेक्षक को पूर्णतः निष्पक्ष एवं अपूर्वाग्रही (unprejudiced) होना चाहिए।
(ii) प्रेक्षक को अपने ध्यान पर पूर्णतः नियंत्रण होना चाहिए।
(iii) प्रेक्षक का मन तथा शरीर थकान द्वारा प्रभावित नहीं हो।
(iv) प्रेक्षक को अन्तर्निरीक्षण के प्रति धनात्मक मनोवृति का होना चाहिए अर्थात् इस प्रक्रिया में उसकी अभिरुचि होनी चाहिए।

→ ध्यान के नियम —

टिचनर का मत है कि ध्यान में सभी चेतन तत्व इस तरह से सुव्यवस्थित हो जाते हैं कि वे चेतन के केंद्र बन जाते हैं। उन्होंने ध्यान के तीन सामान्य अवस्थाओं का वर्णन किया है —

- अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान
- ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान
- व्युत्पन्न या अभ्यासगत ध्यान

Scanned with CamScanner

अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान में संवेदी अनुभूति के कुछ विशेषताएँ जैसे— गुण तथा तीव्रता के आधार पर व्यक्ति का ध्यान किसी वस्तु या घटना की ओर चला जाता है। जैसे— अचानक तेज आवाज या रोशनी होने पर व्यक्ति का ध्यान उस ओर चला जाता है।

ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान से तात्पर्य चेतन तत्वों पर किसी निश्चित उद्देश्य के साथ ध्यान केन्द्रित करने से होता है। इसे टिचनर ने एक कठिन अवस्था बतलाया है क्योंकि इसमें व्यक्ति को स्पष्टता के साथ ध्यान को केन्द्रित करके रखना पड़ता है।

व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान में व्यक्ति अपने अभ्यास के कारण ध्यान देता है। यहाँ ध्यान देने का आधार कुछ सीखी गयी आदतें होती हैं। इस अवस्था में कम प्रयास के बाद भी व्यक्ति का ध्यान चेतन अनुभूति पर केन्द्रित रहता है।

→ **संबंध के नियम —**

टिचनर साहचर्य या संबंध के नियम को संरचनावाद में अधिक महत्व नहीं दिये हैं, फिर भी वे सामीप्यता के नियम (law of contiguity) को संवेदनों एवं प्रतिमाओं के साहचर्य के लिए महत्वपूर्ण माना है।

संबंध के नियम के सहारे टिचनर ने अर्थ की समस्या की व्याख्या का भी प्रयास किया है। 1915 ई० में टिचनर ने अर्थ का सन्दर्भ सिद्धान्त (Context theory of meaning) का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार संवेदन या प्रतिमा का अर्थ उस सन्दर्भ द्वारा निर्धारित होता है जिसमें वह चेतन में उत्पन्न होता है। संवेदन या प्रतिमाओं के समूह से संबंधित प्रक्रियाओं के सीमान्त को सन्दर्भ कहा जाता है।

→ **संवेग —**

टिचनर के लिए संवेग से तात्पर्य शरीर के भीतर संवेदन से उत्पन्न होने वाले तीव्र भावों से होता है। टिचनर ने संवेग के अध्ययन के लिए दो विधियों का प्रतिपादन किया है —

NOTES

- प्रभाव की विधि (Method of Impression)
- अभिव्यक्ति की विधि (Method of Expression).

Scanned with CamScanner

जब हम लोग विभिन्न भावात्मक गुणों की तुलना करना चाहते हैं, तो प्रभाव की विधि का उपयोग करते हैं जैसे- विभिन्न रंगों के भावात्मक विशेषताओं का अध्ययन करने के लिए उसे सुखद से दुःखद के क्रम में सुव्यवस्थित कर सकते हैं। अभिव्यक्ति विधि में शारीरिक प्रक्रियाओं जैसे - सांस लेना, रक्तचाप, हृदय गति आदि के आधार पर संवेदना का अध्ययन किया जाता है।

→ चिंतन —

वुर्जबर्ग स्कूल ने अपने शोधों के आधार पर कहा था कि चिंतन प्रतिमारहित होती है। टिचनर ने इसका विरोध करते हुए कहा कि चिंतन में संवेदना एवं प्रतिमाओं जैसे तत्व पाये जाते हैं। टिचनर ने 'इच्छा' तत्व को भी अस्वीकृत कर दिया जिसे वुण्ट ने काफी महत्व दिया था।

→ मन-शरीर समस्या —

मन-शरीर समस्या के संबंध में टिचनर वुण्ट के मनोवैज्ञानिक समानान्तरवाद को स्वीकार किये। वुण्ट के समान ही उनका मत था कि मानसिक क्रियाएँ, शारीरिक क्रियाओं से भिन्न होती हैं और इनके बीच कोई अन्तःक्रिया नहीं होती है लेकिन किसी एक में परिवर्तन से दूसरे में भी परिवर्तन होता है। इस आधार पर टिचनर मनोविज्ञान के क्यों? का उत्तर देने में असमर्थ हुए।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि टिचनर का संरचनावाद वुण्ट की तुलना में अधिक स्पष्ट था। यह मनोविज्ञान के क्या, कैसे तथा क्यों पहलुओं पर विशेष बल डालता है। इसने मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रयोगात्मक उपागम को भी बढ़ाया है।

Scanned with CamScanner